



समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति और कक्षा- शिक्षण पर उसका प्रभाव

डा भारतेन्दु मिश्र

सह आचार्य

बी एड विभाग

श्री मुरली मनोहर टाउन पी जी कॉलेज बलिया

सारांश

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य विभिन्न शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भाषायी और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों को समान कक्षा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। समावेशी शिक्षा की सफलता केवल सरकारी नीतियों, विद्यालयी संरचना और संसाधनों पर निर्भर नहीं होती, बल्कि शिक्षकों की अभिवृत्ति भी इसमें निर्णायक भूमिका निभाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि सकारात्मक, तटस्थ अथवा नकारात्मक अभिवृत्ति कक्षा-शिक्षण, विद्यार्थी सहभागिता, मूल्यांकन, कक्षा प्रबंधन और शिक्षक की व्यावसायिक भूमिका को किस प्रकार प्रभावित करती है। यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं समीक्षा-आधारित पद्धति पर आधारित है। संबंधित सरकारी नीतियों, अधिनियमों और पूर्व प्रकाशित शोधों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षण, आत्म-प्रभावकारिता, विद्यालयी सहयोग, संसाधनों की उपलब्धता, विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं का ज्ञान तथा पूर्व अनुभव शिक्षकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक अभिवृत्ति वाले शिक्षक शिक्षण में लचीलापन, सहयोगात्मक अधिगम और व्यक्तिगत सहायता अपनाते हैं, जबकि नकारात्मक अभिवृत्ति कम अपेक्षाओं, अलगाव और सीमित सहभागिता को जन्म दे सकती है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण और संस्थागत सहयोग को समावेशी शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: समावेशी शिक्षा, शिक्षक अभिवृत्ति, कक्षा-शिक्षण, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी, आत्म-प्रभावकारिता, शिक्षक प्रशिक्षण।

1. प्रस्तावना

समावेशी शिक्षा ऐसी शैक्षिक व्यवस्था है जिसमें विविध क्षमताओं और आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं तथा शिक्षण प्रक्रिया को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप अनुकूलित किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालयों में प्रवेश देना नहीं, बल्कि उन्हें कक्षा की सभी शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और सह-पाठ्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागी बनाना है।

यूनेस्को के अनुसार समावेशन के लिए शिक्षकों का विविधता के प्रति खुला दृष्टिकोण, उपयुक्त ज्ञान और प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की क्षमता में विश्वास आवश्यक है। अनेक शिक्षक समावेशी शिक्षा के सिद्धांत से सहमत होते हैं, लेकिन प्रशिक्षण, समय, संसाधन और संस्थागत सहयोग की कमी के कारण इसे व्यावहारिक रूप से लागू करने में संदेह अनुभव करते हैं।

भारत में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 शैक्षणिक संस्थानों को भेदभावरहित प्रवेश, उचित सुविधाएँ, व्यक्तिगत सहयोग, सुलभ परिसर और उपयुक्त संचार माध्यम उपलब्ध कराने का दायित्व देता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी दिव्यांग विद्यार्थियों की समान भागीदारी, बाधरहित पहुँच, विशेष शिक्षकों, सहायक तकनीक, सुलभ शिक्षण सामग्री और शिक्षक शिक्षा में समावेशी अध्यापन के प्रशिक्षण पर बल देती है।

इन नीतिगत प्रावधानों के बावजूद समावेशी शिक्षा का वास्तविक स्वरूप कक्षा में शिक्षक द्वारा लिए गए दैनिक निर्णयों से निर्धारित होता है। शिक्षक किस विद्यार्थी से कितनी अपेक्षा करता है, किसे प्रश्न पूछने का अवसर देता है, शिक्षण सामग्री को किस सीमा तक अनुकूलित करता है और विद्यार्थियों की भिन्नताओं को समस्या अथवा संसाधन के रूप में देखता है—ये सभी उसकी अभिवृत्ति से प्रभावित होते हैं।

2. समस्या का कथन

समावेशी शिक्षा की नीतियाँ सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करने की बात करती हैं, लेकिन विद्यालयों में इनका क्रियान्वयन समान रूप से प्रभावी नहीं है। सामान्य कक्षा-शिक्षकों को अलग-अलग प्रकार की दिव्यांगताओं, सीखने की कठिनाइयों, व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं और व्यक्तिगत शिक्षण विधियों का पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिल पाता। बड़ी कक्षाएँ, सीमित समय, सहायक कर्मचारियों की कमी और कठोर पाठ्यक्रम भी शिक्षकों के लिए कठिनाई उत्पन्न करते हैं।

परिणामस्वरूप कुछ शिक्षक समावेशन को सामाजिक और शैक्षिक समानता के अवसर के रूप में देखते हैं, जबकि कुछ इसे अतिरिक्त कार्यभार और कक्षा प्रबंधन की समस्या मानते हैं। यह अंतर विद्यार्थियों की उपलब्धि, आत्मसम्मान, सहभागिता, सहपाठी संबंधों और विद्यालय में अपनत्व की भावना को प्रभावित कर सकता है। इसलिए शिक्षकों की अभिवृत्ति और कक्षा-शिक्षण के बीच संबंध का अध्ययन आवश्यक है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

1. समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले व्यक्तिगत एवं संस्थागत कारकों की पहचान करना।
3. शिक्षक अभिवृत्ति के कक्षा-शिक्षण, मूल्यांकन और कक्षा प्रबंधन पर प्रभाव का विश्लेषण करना।
4. सकारात्मक अभिवृत्ति और समावेशी शिक्षण व्यवहार के बीच संबंध को समझना।
5. शिक्षकों में सकारात्मक समावेशी अभिवृत्ति विकसित करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

4. शोध प्रश्न

1. समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की सामान्य अभिवृत्ति कैसी है?
2. प्रशिक्षण, अनुभव, आत्म-प्रभावकारिता और विद्यालयी वातावरण शिक्षक अभिवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
3. शिक्षक की अभिवृत्ति कक्षा में विद्यार्थियों की सहभागिता और उपलब्धि को कैसे प्रभावित करती है?
4. सकारात्मक समावेशी अभिवृत्ति विकसित करने के लिए कौन-से संस्थागत उपाय आवश्यक हैं?

5. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक समीक्षा पर आधारित है। अध्ययन के लिए समावेशी शिक्षा, शिक्षक अभिवृत्ति, आत्म-प्रभावकारिता, कक्षा व्यवहार और विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों से संबंधित सरकारी दस्तावेजों, अधिनियमों, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोध अध्ययनों का विश्लेषण किया गया।

साहित्य का विषयगत विश्लेषण निम्न आयामों के आधार पर किया गया:

- समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षक की संज्ञानात्मक मान्यताएँ

- विद्यार्थियों के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया
- समावेशी शिक्षण करने की आत्म-प्रभावकारिता
- कक्षा की शिक्षण एवं मूल्यांकन पद्धतियाँ
- विद्यालयी नेतृत्व, प्रशिक्षण और संसाधन
- विद्यार्थियों की सहभागिता एवं सामाजिक स्वीकृति

चूँकि अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, इसमें किसी काल्पनिक सर्वेक्षण या प्रत्यक्ष आँकड़ों का प्रयोग नहीं किया गया है।

6. समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षक अभिवृत्ति

अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी विचार, व्यक्ति अथवा व्यवस्था के प्रति शिक्षक के विश्वास, भावनाओं और व्यवहारगत प्रवृत्ति से है। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में इसे तीन भागों में समझा जा सकता है।

6.1 संज्ञानात्मक पक्ष

इसमें शिक्षक के विश्वास और धारणाएँ शामिल हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक यह मानता है या नहीं कि विशेष आवश्यकता वाला विद्यार्थी सामान्य कक्षा में सफलतापूर्वक सीख सकता है। सकारात्मक विश्वास शिक्षक को विद्यार्थी की क्षमताओं पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करता है, जबकि नकारात्मक विश्वास विद्यार्थी को कमजोर, निर्भर अथवा कक्षा की प्रगति में बाधा मान सकता है।

6.2 भावात्मक पक्ष

यह शिक्षक की भावनाओं से संबंधित है। आत्मविश्वास, सहानुभूति और स्वीकृति सकारात्मक भावनाएँ हैं। इसके विपरीत भय, तनाव, असहायता और निराशा समावेशी शिक्षण के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न कर सकती हैं।

6.3 व्यवहारगत पक्ष

यह वास्तविक कक्षा व्यवहार में प्रकट होता है। सकारात्मक अभिवृत्ति वाला शिक्षक विद्यार्थियों के लिए गतिविधियों को अनुकूलित करता है, अतिरिक्त समय देता है और सहपाठी सहयोग को बढ़ावा देता है। नकारात्मक अभिवृत्ति

वाला शिक्षक विद्यार्थी को गतिविधियों से अलग रख सकता है अथवा उसकी शिक्षा की पूरी जिम्मेदारी विशेष शिक्षक पर डाल सकता है।

7. शिक्षक अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

7.1 प्रशिक्षण और व्यावसायिक ज्ञान

समावेशी शिक्षा से संबंधित प्रशिक्षण शिक्षक को विभिन्न आवश्यकताओं की पहचान, विभेदित शिक्षण, सहायक तकनीक और व्यवहार प्रबंधन की जानकारी देता है। 102 शोध-पत्रों और 40,898 शिक्षकों पर आधारित एक मेटा-विश्लेषण में पाया गया कि विशेष शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की समावेशन संबंधी मान्यताएँ अधिक सकारात्मक थीं। व्यावहारिक अनुभव से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने शिक्षक की सोच, भावनाओं और आत्म-प्रभावकारिता में उल्लेखनीय सुधार किया।

7.2 आत्म-प्रभावकारिता

आत्म-प्रभावकारिता से तात्पर्य शिक्षक के इस विश्वास से है कि वह विविध आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से पढ़ा सकता है। उच्च आत्म-प्रभावकारिता वाला शिक्षक कठिन परिस्थितियों में भी नई रणनीतियों का प्रयोग करता है। कम आत्म-प्रभावकारिता तनाव, असफलता की आशंका और समावेशन के विरोध को बढ़ा सकती है। हाल के शोध में आत्म-प्रभावकारिता और कक्षा व्यवहार को शिक्षक की समावेशी अभिवृत्ति के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानकों के रूप में पाया गया है।

7.3 विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों से संपर्क

दिव्यांग व्यक्तियों अथवा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के साथ पूर्व सकारात्मक अनुभव शिक्षकों की रूढ़ धारणाओं को कम कर सकता है। नियमित संपर्क से शिक्षक विद्यार्थियों की कठिनाइयों के साथ-साथ उनकी क्षमताओं और संभावनाओं को भी समझ पाता है।

7.4 विद्यार्थी की आवश्यकता का प्रकार

सभी प्रकार की विशेष आवश्यकताओं के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति समान नहीं होती। हल्की सीखने की कठिनाइयों या शारीरिक दिव्यांगता वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित करने के प्रति शिक्षक अधिक सहज हो सकते हैं, जबकि गंभीर व्यवहार संबंधी, बौद्धिक अथवा बहुविकलांगता वाले विद्यार्थियों के संबंध में अधिक चिंता अनुभव कर सकते हैं।

7.5 विद्यालयी वातावरण और नेतृत्व

सहयोगी प्रधानाचार्य, विशेष शिक्षक, परामर्शदाता, सहायक कर्मचारी, उपयुक्त सामग्री और लचीली विद्यालयी नीतियाँ शिक्षक को समावेशन अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इसके विपरीत संसाधनों और सहयोग की कमी सकारात्मक सोच वाले शिक्षक को भी प्रभावी समावेशी अभ्यास करने से रोक सकती है। यूनेस्को ने कक्षा के आकार, संसाधनों, पाठ्यक्रम और सहायक कर्मचारियों की उपलब्धता को समावेशी शिक्षण की व्यवहार्यता से संबंधित महत्वपूर्ण कारक माना है।

7.6 व्यक्तिगत और जनसांख्यिकीय कारक

आयु, लिंग, शिक्षण अनुभव, शैक्षिक योग्यता और विद्यालय प्रबंधन जैसे कारकों पर शोध के परिणाम एकसमान नहीं हैं। एनसीईआरटी से संबंधित एक अध्ययन में 15 विद्यालयों के 200 शिक्षकों का अध्ययन किया गया और नमूने में पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई गई। इस प्रकार के परिणामों को स्थानीय संदर्भ और नमूने तक सीमित रखकर समझना आवश्यक है। व्यापक अध्ययनों में जनसांख्यिकीय प्रभावों की तुलना में प्रशिक्षण, आत्म-प्रभावकारिता और विद्यालयी सहयोग अधिक स्थिर कारक पाए गए हैं।

8. कक्षा-शिक्षण पर शिक्षक अभिवृत्ति का प्रभाव

8.1 विद्यार्थियों के प्रति अपेक्षाएँ

शिक्षक की अपेक्षाएँ विद्यार्थी के लिए उपलब्ध सीखने के अवसरों को निर्धारित करती हैं। सकारात्मक शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी को प्रगति करने में सक्षम मानता है। वह चुनौतीपूर्ण किंतु प्राप्त करने योग्य कार्य देता है। नकारात्मक अभिवृत्ति कम अपेक्षाओं को जन्म देती है, जिसके कारण विद्यार्थी को सरल कार्यों तक सीमित किया जा सकता है।

8.2 पाठ योजना और शिक्षण विधि

सकारात्मक अभिवृत्ति वाला शिक्षक पाठ योजना में विविधता को ध्यान में रखता है। वह दृश्य सामग्री, मौखिक प्रस्तुति, गतिविधि, प्रदर्शन, समूह कार्य और सहायक तकनीक जैसे अनेक माध्यमों का प्रयोग करता है। इससे विभिन्न सीखने की शैलियों और क्षमताओं वाले विद्यार्थियों को विषय समझने का अवसर मिलता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयों को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप सहयोग, सहायक उपकरण, तकनीक आधारित साधन, बड़े अक्षरों तथा ब्रेल जैसी सुलभ सामग्री उपलब्ध कराने पर बल देती है।

8.3 विभेदित शिक्षण

विभेदित शिक्षण में विषयवस्तु, गतिविधि, सहायता, गति और अपेक्षित उत्तर को विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार बदला जाता है। सकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षक को इसे समानता के विरुद्ध विशेष सुविधा नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण शिक्षण के रूप में देखने में सहायता करती है।

8.4 कक्षा प्रबंधन

समावेशी कक्षा में विद्यार्थियों के व्यवहार, संचार और सीखने की गति में विविधता होती है। सकारात्मक शिक्षक दंडात्मक दृष्टिकोण के स्थान पर स्पष्ट नियम, सकारात्मक प्रोत्साहन, संरचित दिनचर्या और व्यक्तिगत व्यवहार सहायता का उपयोग करता है। नकारात्मक अभिवृत्ति बार-बार दंड, कक्षा से निष्कासन अथवा विद्यार्थी को समस्या के रूप में चिन्हित करने की संभावना बढ़ा सकती है।

8.5 मूल्यांकन प्रक्रिया

समावेशी अभिवृत्ति वाला शिक्षक केवल लिखित परीक्षा पर निर्भर नहीं रहता। वह मौखिक उत्तर, परियोजना, गतिविधि, प्रदर्शन, पोर्टफोलियो और निरंतर मूल्यांकन का प्रयोग कर सकता है। विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त समय, सहायक उपकरण और वैकल्पिक उत्तर माध्यम प्रदान किए जा सकते हैं। यूनेस्को के अनुसार समावेशी मूल्यांकन का ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि विद्यार्थी अपने अधिगम को किस प्रकार प्रदर्शित कर सकता है, न कि सभी विद्यार्थियों को एक ही कठोर प्रारूप में ढालने पर।

8.6 विद्यार्थी सहभागिता और सामाजिक संबंध

शिक्षक का व्यवहार सहपाठियों की सोच को प्रभावित करता है। जब शिक्षक विविधता का सम्मान करता है और सभी विद्यार्थियों को गतिविधियों में सम्मिलित करता है, तो सहपाठियों में सहयोग और स्वीकृति बढ़ती है। नकारात्मक भाषा, कम अपेक्षा या अलग बैठाने जैसी गतिविधियाँ कलंक, उपेक्षा और सामाजिक अलगाव को बढ़ा सकती हैं।

8.7 शिक्षक का कार्यभार और तनाव

समावेशी शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए अतिरिक्त योजना, अभिलेख, अभिभावक संपर्क और विशेषज्ञों से समन्वय की आवश्यकता हो सकती है। पर्याप्त प्रशिक्षण और सहयोग न होने पर शिक्षक इसे अतिरिक्त बोझ के रूप में अनुभव कर सकता है। इसलिए नकारात्मक अभिवृत्ति को केवल शिक्षक की व्यक्तिगत कमी नहीं माना जाना चाहिए; इसके पीछे संस्थागत परिस्थितियों का भी विश्लेषण आवश्यक है।

9. निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा केवल विद्यार्थियों को एक ही विद्यालय अथवा कक्षा में बैठाने की प्रक्रिया नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने, भाग लेने और सम्मान प्राप्त करने का समान अवसर देना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति में कक्षा-शिक्षक केंद्रीय भूमिका निभाता है। शिक्षक की अभिवृत्ति उसकी अपेक्षाओं, शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन, व्यवहार प्रबंधन और विद्यार्थियों के साथ संबंधों को प्रभावित करती है।

सकारात्मक अभिवृत्ति वाला शिक्षक विविधता को बाधा नहीं, बल्कि शिक्षण प्रक्रिया को समृद्ध करने वाले तत्व के रूप में स्वीकार करता है। फिर भी शिक्षक से अकेले समावेशी शिक्षा लागू करने की अपेक्षा करना उचित नहीं है। प्रशिक्षण, समय, विशेष शिक्षक, सहायक तकनीक, सुलभ सामग्री और विद्यालयी नेतृत्व का सहयोग समान रूप से आवश्यक है। इसलिए समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए शिक्षक की सोच में परिवर्तन के साथ-साथ विद्यालयी व्यवस्था और कार्य परिस्थितियों में भी सुधार किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1. अवरामिडिस, ई., एवं नॉरविच, बी. (2002). एकीकरण एवं समावेशन के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्तियाँ: संबंधित साहित्य की समीक्षा। *यूरोपियन जर्नल ऑफ स्पेशल नीड्स एजुकेशन*, 17(2), 129–147।
डीओआई: 10.1080/08856250210129056

2. दास, ए. के., कुयिनी, ए. बी., एवं देसाई, आई. पी. (2013). भारत में समावेशी शिक्षा: क्या शिक्षक इसके लिए तैयार हैं? *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन*, 28(1), 27–36।
3. डी बोअर, ए., पिज्जल, एस. जे., एवं मिन्नार्ट, ए. (2011). समावेशी शिक्षा के प्रति सामान्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्तियाँ: साहित्य की समीक्षा। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्क्लूसिव एजुकेशन*, 15(3), 331–353। डीओआई: 10.1080/13603110903030089
4. डिग्नाथ, सी., रिम-कॉफमैन, एस., वैन एवाइक, आर., एवं कुंटर, एम. (2022). समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों के विश्वास और उन विश्वासों को प्रभावित करने वाले कारक: एक मेटा-विश्लेषणात्मक अध्ययन। *एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू*, 34(4), 2609–2660। डीओआई: 10.1007/s10648-022-09695-0
5. फॉरलिन, सी., अर्ल, सी., लोरमैन, टी., एवं शर्मा, यू. (2011). समावेशी शिक्षा के प्रति भावनाओं, अभिवृत्तियों और चिंताओं की संशोधित मापनी: सेवापूर्व शिक्षकों की समावेशन संबंधी धारणाओं का मापन। *एक्सेप्शनैलिटी एजुकेशन इंटरनेशनल*, 21(3), 50–65। डीओआई: 10.5206/eei.v21i3.7682
6. परशुराम, के. (2006). मुंबई, भारत में दिव्यांगता और समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्तियों को प्रभावित करने वाले कारक। *डिसएबिलिटी एंड सोसायटी*, 21(3), 231–242। डीओआई: 10.1080/09687590600617352
7. स्क्रग्स, टी. ई., एवं मास्ट्रोपिएरी, एम. ए. (1996). मुख्यधारा और समावेशन के प्रति शिक्षकों की धारणाएँ, 1958–1995: शोध अध्ययनों का संश्लेषण। *एक्सेप्शनल चिल्ड्रन*, 63(1), 59–74। डीओआई: 10.1177/001440299606300106
8. शर्मा, यू., लोरमैन, टी., एवं फॉरलिन, सी. (2012). समावेशी शिक्षण व्यवहारों को लागू करने के लिए शिक्षक आत्म-प्रभावकारिता का मापन। *जर्नल ऑफ रिसर्च इन स्पेशल एजुकेशनल नीड्स*, 12(1), 12–21। डीओआई: 10.1111/j.1471-3802.2011.01200.x

9. सिंगल, एन. (2005). भारत में समावेशी शिक्षा के क्षेत्र का मानचित्रण: भारतीय साहित्य की समीक्षा। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्क्लूसिव एजुकेशन*, 9(4), 331–350। डीओआई: 10.1080/13603110500138277
10. सिंगल, एन. (2006). भारत में समावेशी शिक्षा: अंतरराष्ट्रीय अवधारणा और राष्ट्रीय व्याख्या। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ डिसएबिलिटी, डेवलपमेंट एंड एजुकेशन*, 53(3), 351–369। डीओआई: 10.1080/10349120600847797
11. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन। (1994). *विशेष आवश्यकता शिक्षा पर सलामांका घोषणा और कार्यवाही की रूपरेखा*। यूनेस्को।
12. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन। (2020). *वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट 2020: समावेशन और शिक्षा—सभी का अर्थ सभी है*। यूनेस्को।
13. भारत सरकार। (2009). *बालकों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009*। भारत सरकार।
14. भारत सरकार। (2016). *दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016*। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय।
15. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। भारत सरकार।